गन्ने की उत्तम उपज एवं उत्तम चीनी का पर्ता

गन्ने की अधिकतम पैदावार एवं चीनी के पर्तों पर बहुत से कारणों का प्रभाव पड़ता है। गन्ने की उपज पर निम्नलिखित बातों का प्रभाव पड़ता है।

१. प्रजाति :-

अच्छी प्रजातियों को यदि उगाया जाय तो पैदावार अच्छी मिलती है। क्योंकि पैदावार के अनुसार ही किसान को भुगतान होताहै। परन्तु चीनी का पर्ता अधिकतम होता है तो चीनी कारखाने को भुगतान करने में भी कठिनाईयाँ आ जाती हैं। इस कारण किसान भाईयों को मिल के द्वारा अनुमोदित प्रजातियों को ही उगाना चाहिए जिसकी उपज भी अच्छी हो तथा उसमें चीनी का पर्ता भी अच्छा हो।

२. जलवायु :-

जलवायु का प्रभाव उपज एवं पर्तों पर सबसे अधिक पड़ता है। यदि खेत में पानी अधिक समय तक भर जाये तो पैदावार एवं चीनी का पर्ता कम रहता है।

३. गन्ने के बीज का प्रभाव :-

यदि स्वस्थ रोग रहित बीज का प्रयोग करतें तो जमाव अच्छा होता है तथा पैदावर भी अच्छी रहती है।

४. सस्य विज्ञान सम्बन्धित क्रियाएं :-

समय पर गन्ने की फसल से यदि सब क्रियाएं की जाएं तो पैदावार भी अच्छी होती है तथा उसमें पर्ता भी अच्छा रहता है।

- समय की उचित मात्रा
- बीज की उचित मात्रा
- बीज एवं मिट्टी उपचार
- खरपतवार नियंत्रण
- कीट एवं बीमारियों का नियंत्रण
- खाद की मात्रा का उचित एवं समय से प्रयोग
- सिंचाई का समुचित साधन
- निराई, गुड़ाई एवं बंधाई

चीनी के पर्तों पर प्रभाव निम्नलिखित बातों का प्रभाव पड़ता है।

१. प्रजाति की क्षमता :-

चीनी की मात्रा प्रजातियों की क्षमता पर निर्भर करती है। कुछ प्रजातियां जल्दी पक जाती हैं कुछ देर में पकती हैं।

२. जलवायु :-

जलवायु का बहुत अधिक प्रभाव चीनी के पर्तों पर पड़ता है। यदि तापक्रम १० डि.से.ग्र. से २० डि.से.ग्रे. के बीच में तथा वातावरण में नमी ६० डि.से. कम रहती है व सूर्य की रोशनी ठीक है तो गन्ने में चीनी का पर्ता बढ़ने लगता है यदि तापमान कम हो जाये एवं कोहरे का प्रभाव बढ़ जाता है तो चीनी का पर्ता गन्ने में कम हो जाता है।

३. गन्ने के पौधों में फूल आना :-

कुछ प्रजातियों में तथा वातावरण के कारण गन्ने के पौधों में फूल आने लगते हैं तो इस क्रिया से भी पर्ता कम हो जाता है इस क्रिया का प्रभाव भारत में दक्षिण के प्रान्तों में देखने को मिलता है।

४. उर्वरक एवं पानी की मात्रा :-

फसल में अधिक नाईट्रोजन खाद का प्रयोग अधिक मात्रा में करने से चीनी के पर्तों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। देर से नाईट्रोजन खाद डालने से भी चीनी का पर्ता कम हो जाता है सही मात्रा में सही समय पर सिंचाई करने से उपज एवं चीनी का पर्ता बढ़ता है परन्तु यदि कटाई से पहले खेत में पानी की अधिक मात्रा का प्रयोग करें तो पर्ता कम हो जाता है।

५. गन्ने की पेड़ी :-

गन्ने की पेड़ी की फसल पहले पक जाती है इसका पर्ता अधिक रहता है परन्तु यदि पेड़ी की फसल की देखभाल ठीक से न करें तो उपज के साथ-साथ पर्तों पर भी प्रभाव पड़ता है।

६. गन्ने का गिरना :-

बरसात में हवा चलने से फसल गिर जाती है जिससे गन्ने की गाठों के पास हवाई जड़ें निकल आती हैं। गन्ने में कीट, बीमारियों एवं चूहे इत्यादि का प्रकोप अधिक बढ़ जाता है। इससे उपज के साथ-साथ चीनी का पर्ता भी बहुत कम हो जाता है।

७. गन्ने की कटाई :-

यदि गन्ने की कटाई पकने से पहले करते हैं तो इसका सीधा प्रभाव चीनी के पर्तों पर पड़ता है।

८. गन्ने की सफाई :-

कटे हुए गन्ने की यदि अच्छी तरह से सफाई नहीं करते हैं और उसमें पत्तियों या नीचे जड़े एवं मिट्टी लगी रह जाती है तो उसका प्रभाव चीनी के पर्तों पर पड़ता है।

९. गन्ने की ढुलाई एवं मिल में पिरोई :-

कटाई के बाद यदि गन्ना खेत में २-३ दिन पड़ा रहे उसकी मिल में पिराई न हो तो उसमें चीनी का पर्ता घटने लगता है, क्योंकि उसमें बहुत सी क्रियाएं प्रारम्भ हो जाती हैं।

गन्ने में चीनी के पर्तों को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित कार्य करने चाहिए :-

१. प्रजातियों का सही अनुपात :-

अगेती, मध्य एवं देर से पकने वाली प्रजातियों का अनुपात प्रत्येक गन्ना मिल में उचित मात्रा में रहना चाहिए। यदि पकने के अनुसार प्रजातियों की कटाई की जायेगी तो चीनी का पर्ता भी ठीक आयेगा।

२. **फसल में आवश्यकता के अनुसार उर्बरकों का प्रयोग :-**

गन्ने की फसल में आवश्यकता के अनुसार उर्बरकों का प्रयोग किया जाये तो उपज एवं चीनी का पर्ता अच्छा रहताहै नाईट्रोजन फासफोरस एवं पोटाश उर्बरकों की सही मात्रा आवश्यक है। यदि फसल में फासफोरस की कमी रहती है तो पौधों की जड़ें ठीक से विकसित नहीं हो पाती हैं। जिसे बढ़वार भी कम होती है तथा पौधे गिर जाते हैं।

३. **शरदकालीन गन्ने की बुआई :-**

अच्छे पर्तों के लिए शरदकालीन बुआई उत्तम रहती है। इस फसल की उपज एवं पर्ता ठीक रहते हैं।

४. **कटाई के बाद कम से कम समय के अहेरा पिराई :-**

फसल के कटने के कम से कम समय के अन्दर यदि पिराई कर ली जाये तो उस मील का पर्ता अधिक आता है।

५. **साफ गन्ने की पिराई के लिए लायें :-**

गन्ने सूखी, हरी पत्तियां एवं अंगोला रहित मील को सप्लाई करें सूखे एवं रोग ग्रस्त गन्नों को बाहर निकाल देना चाहिए गन्नों में जड़े एवं मिट्टी न रहनी चाहिए।

६. **कटाई से पहले सिंचाई न करें :-**

गन्ने की कटाई करने से १०-१५ दिन पहले सिंचाई रोक देनी चाहिए।

७. **ऐग्रोसब का प्रयोग :-**

गन्ने में बढ़वार एवं पर्ता शीघ्रतापूर्वक आये इसके लिए दो बार ऐग्रोसब पदार्थ का प्रयोग करें। पहला छिड़काव बुआई के २ माह बाद तथा दूसरा ५-६ माह बाद। एग्रोसेब के प्रयोग से पौधों में किल्लों की संख्या बढ़ जाती है एवं पैदावार तेजी से होती है तथा सब गन्ने एक साथ पकते हैं। इस पदार्थ के प्रयोग से भोजन बनाने की क्रिया सुचारू रूप से चलने लगती है। मलेशिया-धनौरा, जे.पी. नगर चीनी मिल के किये गये प्रयोगों से चीनी का पर्ता गन्ने में जल्दी आ जाता है। यह पौधों का एक जैविक प्रेरक है। यह पौधों की मुख्य क्रियाओं को तेज करता है जिससे पोषक तत्वों का उपयोग अधिक मात्रा में होता है। पैदावार बढ़ाने व गुणवत्ता बढ़ाने में सक्षम है। इसका प्रयोग बीजोपचार से लेकर भूमि को जड़ों के पास तर करना व पत्तियों पर छिड़काव करके कर सकते हैं। बीजोपचार ३०० ग्राम ऐग्रोसेब के तैयार घोल को ५०० लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ के लिए प्रयोग कर सकते हैं। पौधों पर २००-२५० ग्राम. प्रति एकड़ ऐग्रोसेब से घोल २०० लीटर पानी में मिलाकर कर सकते हैं।